सत्य साहित्य

वर्ष 2 / अंक 1
जुलाई 2017
Year 2/ Vol 1
July
2017

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

राम नाम लौ लागी,
अब मोहे राम नाम लौ लागी ।।
उदय हुआ शुभ भाग्य का भानु,
भक्ति भवानी जागी ।।१।।
मिट गये संशय भव भय घोर ।
भ्रान्ति भूल भी भागी ।।२।।
पाप हरण श्री राम-चरण का
मन बन गया अनुरागी ।।३।।

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- **Faith in the Master**
- व्यास पूर्णिमा (९ जुलाई) की बधाई !
- भक्ति प्रकाश : गुरु महिमा
- गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः ....
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹ 5

Implicit faith in the Teacher & all the emotional love we can bestow on him will never alone make us imitators of him. We must go and do likewise, else we are not improving the great blessings which our Master and suffered to bestow upon us.

गुरु में अटूट विश्वास तथा
अटूट प्रेम ही उनके होने नहीं उस+
कामों पर चल सकते हैं + हम भी
उसी प्रकार करें अन्यथा हम
गुरु की कृपा के पात्र नहीं हो सकते।

(Param Pujyaniya Prem Ji Maharaj's notes)

व्यास पूर्णिमा की बधाई !

प्रातः स्मरणीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का प्रादुर्भाव चैत्र पूर्णिमा को हुआ। व्यास पूर्णिमा पर परम गुरु राम ने उनकी झोली में अनमोल राम–रत्न डाल दिया, तभी से परम संत ने साधकों में वितरण करके, उनके प्रत्येक दिवस को पूर्णिमा जैसा बना दिया। गुरुजन रूपी पूर्णचन्द्र के स्मरण मात्र से हृदय–समुद्र में आनन्द की हिलोरें लेने लगता है।

अमृतवाणी का 'राम–कृपा अवतरण' राम कृपा अनुभूति के वास्तविक अवतरण का अक्षरशः वर्णन है। 'अमृतवाणी', 'भक्ति प्रकाश' और बाकी ग्रन्थों के गहन अध्ययन व मनन से श्री स्वामी जी महाराज द्वारा प्रतिपादित सरलतम सहज योग पद्धति, गृहस्थ में संन्यास, कर्मयोग, आडम्बर रहित साधना पद्धति, मानस पूजा, सेवा धर्म ऊर्जारूप में अखिल भुवन में उपस्थित राम के विषय में स्पष्ट शाब्दिक अनुकरणीय उपदेश हैं।

'हे कण कण में व्याप्त राम ! आपका स्मरण सदा कर पाएँ। राम नाम आत्मसूर्य बन हमारे हृदयों में सतत् प्रतिष्ठित रहे। चलते फिरते अजपा–अनहद जाप चलता रहे। हम आपके कृपा पात्र बनने योग्य हों।'

गुरु महिमा, गुरु महिमा। अपार महिमा, गुरु महिमा।।

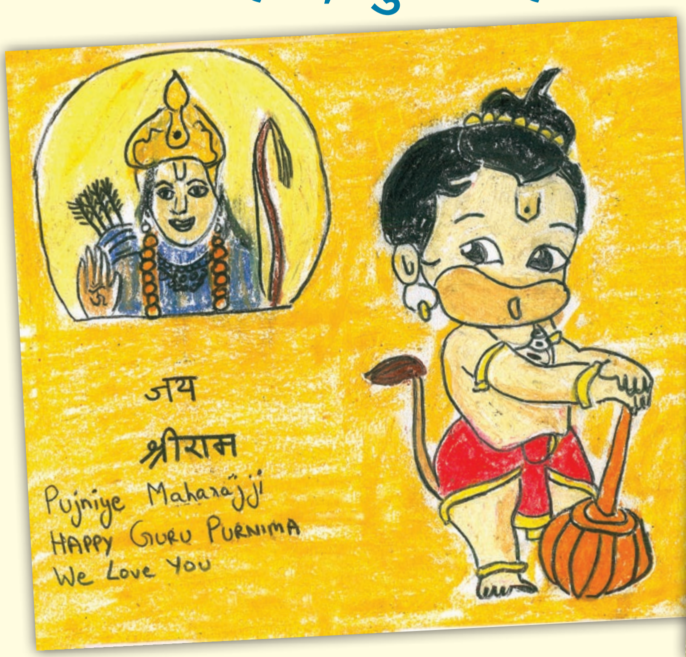

Leaving to-morrow morning for Vyas Poornima s.s. at Haridwar. Please accept my heartiest badhayee on this auspicious occasion. May we all remain worthy of Pujya Baba & Gurudev's blessings & Grace forever.

Loving namaskar to all the devotees & votaries of Ram Naam.

कल प्रातः व्यास पूर्णिमा के उपलक्ष्य में साधना सत्संग के लिए हरिद्वार जा रहा हूँ। कृपया इस मांगलिक पर्व पर आप सब मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। हम सब सदा पूज्य बाबा और गुरुदेव के आशीर्वाद के पात्र बने रहें। सब राम नाम के भक्तों को मेरा प्रेममय नमस्कार।

May you all be immensely blessed with His Loving Grace and that of my Great Masters.

Most loving Jai Jai Ram.

आप सबको परमेश्वर की और मेरे महान् गुरुजनों की भरपूर प्रेममयी कृपा प्राप्त हो सप्रेम जय जय राम।

Mere Gurujano ki Kripa sada sada aap sab per bani rahé. Most loving Pranam.

मेरे गुरुजनों की कृपा सदा सदा आप सब पर बनी रहे। सप्रेम प्रणाम

GURU GLORY
गुरु महिमा

सत्यानन्द

Sadguru thou art competent, spiritual path en route.
To save me from delusion, all base emotions uproot.

Himself appeared and hand held, Sadguru on the path.
Pacified pangs of suffering, bestowed Naam-jaap.

Was drifting in confusion, when fortune turned around.
Yearning awakened in me, unexpected Guru found.

Grasping hand pulled me out, from depravity hole.
Pointed out God's abode, giving encouragement whole.

Sadguru's glory is immense, the secret know a few.
Transmigration fear removes, from sinful reaction rescues.

In Sadguruji's refuge, reflection knowledge mine.
Worship meditation penance jap, contentment piety find.

In shelter of true saint, rest in tranquil calm.
Hearts desire is fulfilled, by chanting Ram-Naam.

Salute the Guru repeatedly, with humility and deference.
On fortuitous ship of Name, who delivered from nescience.

Required is a Guru who, selfishness has crossed.
Benefactor benevolent, in highest good engrossed.

Wherever he dwells he does, glory of Name acclaim.
Freely distributes love of God, asking not caste name.

Remains coloured in Ram's hue, in devotion dyes everyone.
Knows Ram as primordial sound, the Ageless Formless One.

One without name and form, various are His names.
Ram is seed syllable, from Sadguru secret claim.

Sadguru scent of divine love, akin to sandal tree.
To whosoever comes close, night and day gives free.

Society of a true saint, colours with devotion hue.
Daily does it multiply, never will it subdue.

Sit in Guru's company, mystery of devotion learn.
Hear intuitive insights, Vedic philosophy discern.

Greedy impostor Gurus many, ignorant monastery heads.
Know they lack quintessence, quite worthless figureheads.

By bonafide Guru here understand, a realised God-knower.
Spiritual instruction righteous action, piety wisdom bestower.

Detached loving concern is, sign of true saint.
Dispassionate gentlemanliness, from perversity bias untaint.

Beyond anger, contentment, peace devotion mine.
Absorbed in Ram-Naam, love devotion enshrine.

A living pilgrimage abode such, an eminent Guru believe.
By meditation wisdom chanting, all success does achieve.

Repository of Highest Truth, the spiritual guide esteem.
By alms giving devotion, all desires does redeem.

(भक्ति प्रकाश, गुरु महिमा, पृष्ठ 51–53) ■

PRAYER to GURU

"I donot know whether I am a disciple or not. Therefore, O Ocean of Mercy & Compassion, pray, make me a proper disciple. Generate in me that mumukshutva which makes me a disciple & give me the spirit of willing obedience. Help me in trying to follow thy instructions. Help me in trying to mould myself upon the pattern set up by thee."

*(**Param Pujyaniya Maharaj Ji's** notes from Swami Chidanand's 'Guide to Noble Living')*

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

आज संत तुकाराम के प्रसिद्ध श्लोक 'गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः', का अर्थ समझते हैं।

संत तुकाराम कहते हैं, 'गुरु सृष्टा'। सृष्टि की रचना करने वाले को सृष्टा कहा जाता है यानि ब्रह्मा। गुरु ही ब्रह्मा है जो एक शिष्य को, उसके जीवन को नई दिशा देता है। शिष्य के जीवन का रुख बदलने वाला और नया जीवन देने वाला है गुरु। आप कहते हो, आज हमारी दीक्षा हुई है, आज हमारा पुनर्जन्म हुआ है; बिना मृत्यु के, बिना मरे, पुनर्जन्म। यह ब्रह्मा जी नहीं कर सकते, यह गुरु करता है। गुरु आपके जीवन को एक नई direction देता है। गुरु की हर वक्त चेष्टा रहती है कि साधक का स्वभाव बदले। मैं वह दिन देखना चाहता हूँ, जब साधक अपना स्वभाव बदल कर, अपनी अफसरी भूल कर, एक शिष्य बन कर आएगा। शिष्य के जीवन को नई दिशा देने के लिए, उसके मन को सुधारने के लिए, स्वभाव बदलने के लिए गुरु उसे नित्य अवसर और प्रेरणा देता है। तुकाराम गुरु 'ब्रह्मा' का अर्थ समझा रहे हैं, जैसा हम समझते हैं वैसा नहीं बल्कि वास्तविक अर्थ, उसका मार्मिक अर्थ।

'गुरु विष्णु' यानि गुरु रक्षा करता है, गुरु पालन करता है। किस चीज़ से रक्षा करता है? शारीरिक रक्षा तो गुरु नहीं करता, जैसे हम समझ रहे हैं। कभी–कभी आप कहते हो, समझते हो, गुरु महाराज ने आज हमारी रक्षा की। बड़ा भयानक ऐक्सीडैंट हुआ था। कार का तो कचूमर निकल गया लेकिन हम सुरक्षित रहे। यह तो आपका विश्वास है। लेकिन गुरु यह काम शारीरिक तौर पर तो नहीं कर सकता। यदि गुरु को शरीर समझते हो तो वह एक समय पर एक ही जगह पर हो सकता है। यदि गुरु कहीं और है तो जहाँ आपका ऐक्सीडैंट हुआ है वहाँ नहीं हो सकता। वहाँ होता भी तो क्या कर लेता ?

तुकाराम इन चीज़ों में विश्वास न रख कर जो गलत धारणाएँ हैं उन पर चोट मार कर, खत्म कर के तो सच्चाई को प्रकट करते हैं। गुरु विष्णु, गुरु रक्षक है, गुरु बचाता है, किससे ? पाप से बचाता है, पाप करने से बचाता है जिससे गुरु के अतिरिक्त, परमेश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं बचा सकता।

गुरु शरीर नहीं है, वह तत्व है। आप शराब पी रहे हैं, आपका गुरु वहाँ होता तो नहीं। फिर भी गुरु कैसे वहाँ होता है? लेकिन, कोई चीज़ है जो आपको रोक रही है। आपको लगता है, 'मेरा गुरु मुझे देख रहा है।' आप किसी भी प्रकार का पाप करने जा रहे हो तो एक दफा आप हिलते हो। सामान्य व्यक्ति तो ऐसा नहीं कर सकता न !

मैं वह दिन देखना चाहता हूँ, जब साधक अपना स्वभाव बदल कर, अपनी अफसरी भूल कर, एक शिष्य बन कर आएगा। जीवन को नई दिशा देता है, मन सुधारने के लिए, स्वभाव बदलने के लिए गुरु नित्य अवसर देता है और प्रेरणा देता है।

आप हिलते हो, क्योंकि आप श्रीरामशरणम् से जुड़े हुए हो। आप किसी गुरु से जुड़े हुए हो। सामान्य व्यक्ति को इन बातों का कोई फर्क नहीं पड़ता। दिन में यदि गलती से आपसे कोई पाप हो जाता है तो रात को आपको नींद नहीं आती। वह राम आपको सोने नहीं देता, चैन नहीं लेने देता। परमात्मा को लगता है, क्या कर डाला आपने ! गुरु को भी धक्का लगा और उसे भी।

पाप से रक्षा करता है, कुपथ पर जाने से रोकता है, परमेश्वर ने उसे यह सामर्थ्य दे रखा है। कुमार्ग पर चलने से गुरु बचाता है और सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देता है, प्रोत्साहन देता है।

'गुरु ब्रह्मा' से तुकाराम अभिप्राय लेते हैं कि गुरु नए जीवन के रचयिता हैं। इसलिए, उन्होंने गुरु को ब्रह्मा कहा है। ब्रह्मा जैसे गुरु के, संत के मुख तो नहीं हैं, लेकिन जिस प्रकार ब्रह्मा जी हमारे सृष्टा हैं, विधाता हैं, उसी प्रकार से गुरु शिष्य के सृष्टा हैं। गुरु शिष्य को नई दिशा देता है और बिना मृत्यु के पुनर्जन्म देता है। ब्रह्मा जी तो पहले मारते हैं, फिर जन्म देते हैं। लेकिन, गुरु भी शिष्य को अपने ढंग से मारते ही हैं। शायद, पहला व्यक्तित्व मार देते हैं। इसलिए, अच्छा शिष्य कहता है कि वह जो था वह मर गया। अब मैं जो हूँ वह मैं नहीं था। मेरे अन्दर वह जो चीज़ थी अब नहीं रही। कोई अपराधी है, जेल में रहा है, वहीं राम नाम की जीवन भर उपासना की है, उपासना करने के बाद वह ऐसा शब्द कहता है, 'मैं अब वो नहीं रहा। गुरु द्वारा मंत्र लेकर नाम जपा है और मैंने अपने जीवन का रूपान्तर कर लिया है।'

श्रेय गुरु को मिलता है। गुरु शिष्य के मन को सम्भालता, सुधारता है और उसके स्वभाव में परिवर्तन लाता है। मन सुधरा तो जग सुधरा। मन सुधरा तो व्यक्ति स्वयं भी सुधर जाता है। सच्चा संत या सच्चा गुरु मन पर पूरी दृष्टि रखता है, शरीर पर नहीं। गुरु का सम्बन्ध ही मानसिक है, आत्मिक है। इसलिए, साथ रहने के लिए तो शरीर चाहिए लेकिन पास रहने के लिए शरीर की आवश्यकता नहीं। गुरु के साथ रहने वाले प्रायः खाली, क्योंकि वह उन्हें शरीर से आगे देख ही नहीं पाते। लेकिन पास रहने वाले, जिनके आत्मिक संबंध हैं, दूर रहते हुए भी सब कुछ पा जाते हैं। साथ रहने के लिए तो शरीर की आवश्यकता है, लेकिन पास रहने के लिए तो शरीर की आवश्यकता नहीं !

यदि, गुरु को शरीर समझा जाए तो वह एक समय पर तो एक ही जगह पर हो सकता है सब जगह पर नहीं। आप परमेश्वर के लिए कहते हो कि हमें महसूस होता है कि परमेश्वर हर वक्त हमारे अंग–संग हैं। संतों, महात्माओं के लिए भी इसी प्रकार कहा जाता है। यह सच्ची दृष्टि है, ऐसा ही होना चाहिए। संत तुकाराम गुरु 'ब्रह्मा' का अर्थ, ऐसा ही समझा रहे हैं।

गुरु विष्णु हैं, हमारे रक्षक हैं। हमारे पोषक हैं। शरीर की रक्षा गुरु नहीं कर सकता, कम से कम मैं ऐसा मानता हूँ। लेकिन, गुरु पाप से बचा सकता है। गुरु पाप से रक्षा करता है, कुपथ पर जाने से रोकता है, परमेश्वर ने उसे यह सामर्थ्य दे रखा है। कुमार्ग पर चलने से गुरु बचाता है और सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा देता है, प्रोत्साहन देता है और धक्के मारता है। ईश्वर की ओर बढ़ने के लिए गुरु प्रेरणा देता है, आत्मिक बल देता है और प्रोत्साहन देता है। सत्संगति में यह हर उस साधक को मिलता है जो ग्रहणशील है, झुकना सीख गया है और

जिसके अन्दर विनम्रता आ गई है,। ऐसा शिष्य अधिक पा लेता है। जो ऐंठा रहता है वह खाली तो नहीं रहता, लेकिन कम से कम पा पाता है। आप कहीं भी छुप जाओ, सूर्य के प्रकाश से आप बच तो नहीं सकोगे। उसका स्वभाव है प्रकाश देना, उसका स्वभाव है तेज देना। आप अंधेरी से अंधेरी कोठरी में भी जा कर छुप जाओ, कहीं न कहीं सूर्य की किरण आपको दिखाई दे जाएगी। अतः गुरु विष्णु ।

'गुरुर्देवो महेश्वरः !' संत तुकाराम कहते हैं गुरु पाप से हमें बचाता भी है, पाप करने से रोकता भी है। पापी मार्ग से बचाता है, हटाता है, रोकता है, इस मार्ग पर चलने नहीं देता। पुराने कर्मों को जला कर राख भी कर देता है। पुराने कर्म जल गए, नए पाप से बच गए तो गुरु देवो महेश्वरः। वह मोक्ष का दाता है, आप मानो न मानो लेकिन शास्त्र इस प्रकार कहता है कि मुक्ति का दाता गुरु है, परमात्मा नहीं।

बहुत उच्च बातें हैं ये। इन बातों पर मैं चर्चा नहीं करता। हर एक के विश्वास का यह विषय नहीं है। हर एक का अपना अपना स्तर है और उसी के अनुसार व्यक्ति का विश्वास हुआ करता है। उसकी श्रद्धा हुआ करती है। अतएव हर शिष्य का यह विषय नहीं है। बहरहाल, आज तुकाराम जी की चर्चा कर रहे हैं तो जो चर्चा उन्होंने की है, वही आपकी सेवा में रखी गई है। मैं अपनी तरफ से कुछ नहीं कह रहा। इससे अधिक भी है कहने को पर मैं कहता नहीं हूँ।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी के प्रवचन फरवरी 2010)

श्रद्धा सुमन : मंगलमय निर्वाण दिवस

2 जुलाई और 29 जुलाई हमारे गुरुजनों, पूजनीय श्री महाराज जी और परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की संसार से भौतिक चोला छोड़ने की मंगलमयी पुण्य तिथियाँ हैं। पूजनीय श्री महाराज जी कहते हैं, 'महान संतों की मृत्यु भी मंगलमयी होती है।'

माँ शबरी कहती हैं कि गुरु कभी मरते नहीं, उनकी आत्मिक ज्योति व उपस्थिति सदा उनकी तपस्थली पर विद्यमान रहती है और अपने शिष्यों का पथ प्रदर्शन करती रहती है। गुरु को शरीर की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। सद्‌गुरु तो जन्म जन्मान्तर तक अपने शिष्यों और शरण्यों को अपना संरक्षण प्रदान करते रहते हैं। यह हमारे तीनों गुरुजन प्रामाणिक रूप से कर रहे हैं।

सद्‌गुरु चन्दन सम कहा, भगवद्–प्रेम सुवास।

निशदिन दान करे उसे, जो जन आवे पास।।

(भक्ति प्रकाश, गुरु महिमा, पृष्ठ 52)

हमें केवल पास आने की जरुरत है, वे तो सदा बाँह पसारे खड़े हैं।

गुरुवर भी होते सुखदाई, बनते जो पिता और माई।

(रामायणसार, पृष्ठ 479)

गुरुदेव की सूक्ष्म अनुभूति

25 से 28 जनवरी 2013, ग्वालियर साधना सत्संग में शामिल होने की हमें अनुमति मिल चुकी थी। दुर्भाग्य से, ग्वालियर साधना सत्संग से ठीक एक सप्ताह पूर्व मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया। मेरी पीठ में असहनीय दर्द शुरु हो गया था जो ठीक होने का नाम नहीं ले रहा था। ठंड भी काफी थी पर मन में बार–बार यही प्रार्थना कर रही थी कि हे प्रभु! साधना सत्संग में ठीक से भाग ले सकूँ।

ग्वालियर पहुँचने तक दर्द जारी था। हम रात्रि 9 बजे सत्संग भवन में पहुँचे। पीठ का दर्द असहनीय हो गया था। पति और बेटा तो पुरुष वर्ग में चले गए और मैं एक–दो महिला साधकों के साथ अपने कमरे में आ गई। रात में दर्द के कारण नींद नहीं आ रही थी। बार–बार गुरुदेव से प्रार्थना कर रही थी, क्या इस बार का सत्संग दर्द से कराहते हुए ही निकलेगा। यही प्रार्थना करते–करते रात के दो बज गए और मुझे झपकी आ गई। ऐसा महसूस हुआ जैसे कि कोई पीठ पर दवा लगा रहा है, हाथ का स्पर्श महसूस हुआ। नींद खुली तो सुबह के 4 बजे थे और एक सुखद अनुभूति यह हुई कि मैं स्वस्थ महसूस कर रही थी। निश्चित ही पूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्म रूप से यह अनुभूति दी, जो मैं जिन्दगी भर नहीं भूल पाऊँगी। ■

जीवन परिवर्तन

एक परिवार घूमने के मकसद से, एक साधक परिवार के साथ मनाली गए थे ।

साधक परिवार ने उन्हें बताया कि वे रोज़ श्रीरामशरणम् सत्संग के लिए जाते हैं। गुरुदेव के दर्शन के लिए वे भी चल सकते हैं। वह परिवार कुछ असमंजस मे पड़ गया और फिर उन्होंने बताया कि उन लोगों ने 'अमृत छका' हुआ है। जिसे हम 'नाम दीक्षा' कहते हैं, उसे ही वे 'अमृत छकना' कहते हैं।

अगले दिन, उन्होंने श्रीरामशरणम् सत्संग में शामिल होने की इच्छा ज़ाहिर की। साधक परिवार के साथ शाम 4 से 5 बजे सत्संग के लिए श्रीरामशरणम् आ गए। जब वे सत्संग attend करके बाहर निकले, उनकी आँखों में खुशी के आँसू थे। श्री महाराज जी ने उनको एक क्षण के लिए बुला कर कुछ कहा और उसके बाद वे घूमना–फिरना भूल कर रोज सत्संग के लिए जाने लगे।

उनकी शादी को 15 वर्ष हो गए थे और उनकी कोई संतान नहीं थी। मनाली से वापस अपने घर, लुधियाना आकर उन्होंने अपना इलाज शुरु किया और 1 साल बाद उनके यहाँ बेटी हुई। उन्होंने साधक परिवार को बताया कि महाराज जी के दर्शन करके उन्हें सब कुछ मिल गया। इस घटना के बाद से वे नियमित रूप से श्रीरामशरणम् का सत्संग attend करने लगे। एक ही मुलाकात ने उनके जीवन को बदल दिया। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

अप्रैल से जून 2017

साधना सत्संग, खुले सत्संग, उद्घाटन एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में 11 मार्च से 13 मार्च तक तीन दिवसीय होली के उपलक्ष्य में खुला सत्संग लगा।
- **झाबुआ**, मध्यप्रदेश में 27 मार्च से 5 अप्रैल तक नवरात्रों में 9 दिवसीय मौन साधना शिविर लगा। इसमें विभिन्न प्रान्तों एवं विदेश के साधक सम्मिलित हुए।
- **ईचलकरंजी, कोल्हापुर** महाराष्ट्र में 2 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें 110 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 7 से 12 अप्रैल तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा जिसमें 12 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ज्वाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें 921 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **अमरपाटन**, मध्यप्रदेश में 15 अप्रैल को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें 934 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मंडी**, हिमाचल प्रदेश में 16 अप्रैल को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 250 साधक सम्मिलित हुए और 48 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भरेड़ी**, हिमाचल प्रदेश में 23 अप्रैल को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 116 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जंडियाला गुरु**, पंजाब में 28 अप्रैल को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का विधिवत् भव्य उद्घाटन हुआ (उपर चित्र देखें) जिसमें 2500 व्यक्ति सम्मिलित हुए और 191 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **काठमाण्डू**, नेपाल में 4 से 6 मई तक तीन दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 44 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चम्बी**, (नगरी) हिमाचल प्रदेश में 14 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें 23 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जंडियाला गुरु**, पंजाब में 21 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें 70 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा में 15 से 25 मई तक श्री राम नाम अखण्ड जाप का आयोजन हुआ। 25 मई को

विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें 79 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **शुक्रताल**, उत्तर प्रदेश में 28 मई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें 200 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मनाली**, हिमाचल प्रदेश में 14 से 16 जून तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में मार्च से मई तक 134 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **किश्तवाड़**, जम्मू एवं कश्मीर जो कि जम्मू से लगभग 250 कि.मी. आगे है, में 23 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, जिसके पश्चात् नाम दीक्षा होगी।
- **भद्रवाह**, जम्मू एवं कश्मीर में 25 जून को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, जिसके पश्चात् नाम दीक्षा होगी।
- **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक पूजनीय श्री महाराज जी के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में तीन रात्रि साधना सत्संग लगेगा।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **औबेदुल्लागंज,** मध्यप्रदेश श्रीरामशरणम् के लिए भूमि खरीद ली गई है और 26 जून सोमवार को भूमि पूजन होना निश्चित हुआ है।
- **अमरपाटन,** मध्यप्रदेश श्रीरामशरणम् के लिए भूमि खरीद ली गई है। ■

Sadhna Satsang (July to December 2017)		
Haridwar	30 June to 3 July	Friday to Monday
Haridwar	4 to 9 July	Tuesday to Sunday
Haridwar(Ramayani)	21 to 30 September	Thursday to Saturday
Haridwar	11 to 14 November	Saturday to Tuesday
Gwalior	24 to 27 November	Friday to Monday

Open Satsang (July to December 2017)		
Delhi	27 to 29 July	Thursday to Saturday
Rohtak	12 to 13 August	Saturday to Sunday
Rattangarh	19 to 20 August	Saturday to Sunday
Rewari	2 to 3 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	15 to 17 September	Friday to Sunday
Sydney	30 September to 1 October	Saturday to Sunday
Jammu	13 to 15 October	Friday to Sunday
Amritsar	22 October	Sunday
Hisar	28 to 29 October	Saturday to Sunday
Pathankot	4 to 5 November	Saturday to Sunday
Fazalpur, Kapurthala	18 to 19 November	Saturday to Sunday
Bhiwani	9 to 10 December	Saturday to Sunday
Surat	16 to 17 December	Saturday to Sunday
Sujanpur	23 to 24 December	Saturday to Sunday

Naam Deeksha in Other Centres (July to December 2017)		
19 August	Saturday	Rattangarh
27 August	Sunday	Auckland (New Zealand)
3 September	Sunday	Rewari
17 September	Sunday	Gurdaspur
1 October	Sunday	Sydney (Australia)
3 October	Tuesday	Ba (Fiji)
4 October	Wednesday	Nadi (Fiji)
5 October	Thursday	Jabalpur (MP)
8 October	Sunday	Suva (Fiji)
15 October	Sunday	Jammu
20 October	Friday	Labasa (Fiji)
22 October	Sunday	Amritsar
29 October	Sunday	Hisar
5 November	Sunday	Pathankot
19 November	Sunday	Fazalpur, Kapurthala
24, 26 & 27 November	Fri, Sun & Mon	Gwalior
3 December	Sunday	Ujjain
10 December	Sunday	Bhiwani
17 December	Sunday	Surat
24 December	Sunday	Sujanpur

Naam Deeksha in Shree Ram Sharnam, Delhi (July to December 2017)		
9 July	Sunday	4:00 PM
6 August	Sunday	10.30 AM
10 September	Sunday	10.30 AM
8 October	Sunday	10.30 AM
3 December	Sunday	11:00 AM

Purnima (July to December 2017)	
9 July	Sunday
7 August	Monday
6 September	Wednesday
5 October	Thursday
4 November	Saturday
3 December	Sunday

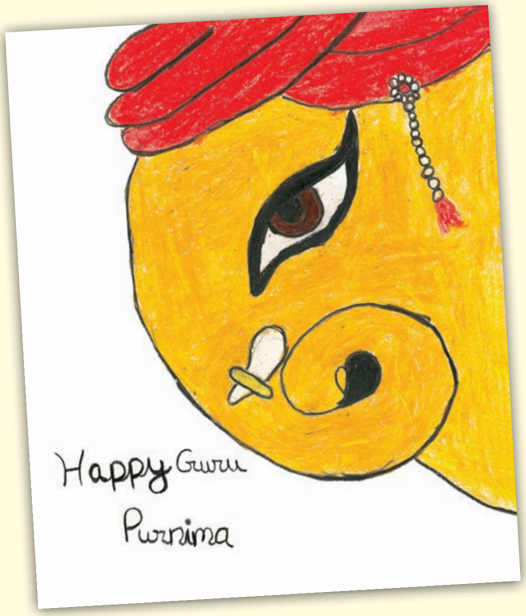

ध्यान मूलं गुरु मूर्ति,
पूजा मूलं गुरु पदम्।
मंत्र मूलं गुरु वाक्यं
मोक्ष मूलं गुरु कृपा।।

MATCH THE COMBINATIONS OF GURUS AND THEIR SHISHYA

1. Ram Ji
2. Parshuram Ji
3. Param Pujyaniya Prem Ji Maharaj
4. Vashisht Ji
5. Surya Dev
6. Swami Ramkrishna Paramhans
7. Param Pujyaniya Swami Satyanand Ji Maharaj
8. Dronacharya
9. Sukracharya
10. Sandipani

1. Ram Ji
2. Hanuman Ji
3. Param Pujyaniya Swami Satyanand Ji Maharaj
4. Krishna Ji
5. Swami Vivekanand
6. Arjun
7. Ravan
8. Param Pujyaniya Prem Ji Maharaj
9. Param Pujyaniya Vishwamitter Ji Maharaj
10. Karna

Answers: 1-2, 2-10, 3-9, 4-1, 5-2, 6-5, 7-8, 8-6, 9-7, 10-4

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and
printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. "Applied for".